© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 03 | April - June 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

शाशवत जीवन मूल्य एवं समकालीन जीवन मूल्य : एक अध्ययन

शोधकर्ता : रोहताश

9 772278 684800 03
© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

शाश्वत जीवन मूल्य और समकालीन जीवन मूल्य :जीवन मूल्य दो प्रकार के होते हैं–

1. शाश्वत मूल्य
2. समकालीन मूल्य

भारतीय दर्शन की दृष्टि से शाश्वत मूल्यों का स्थान सर्वोच्च रहा है। किसी भी साहित्य का अवलोकन करें तो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक सम्पूर्ण साहित्य शाश्वत मूल्यों से अनुप्राणित है। मानव समाज को उत्तरोत्तर गति प्रदान करनेमें इन मूल्यों की अहम् भूमिका रही है। इन मूल्यों के अनुसरण के कारण ही उत्कृष्टचिंतन और आदर्श कर्तव्य की दिशा में मनुष्य को अग्रगामी एवं प्रगतिशील बनने मेंकापफी सहायता मिली है। हमको अपने अतीत की विरासत में मिले हैं। ये किसी विशेषवर्ग सम्प्रदाय के न होकर समस्त मानवता को विकसित करते हैं। डॉ. हुकुमचन्दराजपाल मूल्यों की शाश्वत्ता को स्वीकारते हुए कहते हैं–फवह 'जीवन–मूल्य' ही क्या जो परिस्थितियों के कारण नष्ट हो जाए?हाँ, इसके स्वरूप में थोड़ा बहुत परिवर्तन हो सकता है। वस्तुतः जीवन मूल्य यदिवास्तविकता में वे जीवन के मूल्य हैं तो उन्हें प्राचीनता एवं नवीनता की सीमा मेंबांध ही नहीं जा सकता। जीवन की तरह जीवन–मूल्य भी शाश्वत हैं। इनके अनुसार जो मूल्य शाश्वत हैं वह सदैव ही शाश्वत रहते हैं। उनमें परिवर्तनशीलता कभी नहीं आती है, जो मूल्य परिस्थितियों के कारण नष्ट हो जाये वह मूल्य ही नहीं है ये तो सदैव कालजयी रहते हैं। एक अन्य विद्वान ने भी कहा है– मानवीय समता, न्याय, (प्रेम,सहानुभूति, आस्था जैसे चिरन्तन मूल्यों को लेकर चलने वाले धर्म ही वास्तविक है, अन्य प्रतीयमान और छलावा है। धर्म की धरणा एक व्यापक धरणा रही है, जिसके अंतर्गत आर्थिक, सामाजिक, नैतिक अर्थ मात्रा के मूल्य भी अंतर्भुक्त रहे हैं।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 03 | April - June 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। मनुष्य ने चाहे जितनी ही प्रगति कर लीहो। लेकिन वह ईश्वर की सत्ता को नहीं नकार सकता है क्योंकि पुरूषार्थ चतुष्टय हरसमय ही समाज में व्याप्त रहेगा। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष अभी भी ज्यों के त्यों विद्यमान हैं। विज्ञान की प्रमुखता होते हुए भी ईश्वर में अब भी विश्वास किया जाता है।य1भारतीय चिंतन धरा के अनुसार जब मनुष्य 'स्व' के दायरे से निकलकर' सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना करता है तो वह सत्य, प्रेम, दया, अहिंसा, समर्पण,वात्सल्य आदि शाश्वत मूल्यों की स्थापना करता है–भारतीय काव्यशास्त्रा में व्यक्ति के संस्कारों, वृत्तियों, गुणों एवं आवश्यकताओं के संदर्भ `में पुरूषार्थों ;मूल्योंद्ध की स्थिति का उल्लेख होता रहा है पर शरीर के प्रत्येकपक्ष के आधर पर यह मूल्य चर्चा नवीन युग की देन कही जा सकती है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि नवीन युग हमारे शाश्वत मूल्यों में थोड़ा परिवर्तन करना चाहता है जिससे जीवन को और सुंदर तथा सार्थक बनाया जा सके।फ्शाश्वत मूल्यों की धरणा का एक अनिर्दिष्ट गोलाकार दृष्टि का परिणाम होती है। निरपेक्षता, वस्तुपरकता और शाश्वतता मूल्यों में नहीं होती बल्कि उस तन्त्राके प्रति सार्वजनिक विश्वास में होती है जिससे मूल्य जन्मते हैं। हमारे युग मेंविज्ञान–आधरित ज्ञान, निरपेक्ष कोटि के सार्वजनिक विश्वास का दावा करता है।य3समकालीन का शाब्दिक अर्थ है अपने काल की बात करना और अपनेकाल की बात करते समय अतीत और भविष्य के साथ सामंजस्य रखना।

इसका अर्थ बताते हुए डॉ. विजेन्द्र कहते हैं–फ्समकालीनता का अर्थभौतिक रूप से जो घटित हो रहा है मात्रा उतना नहीं बल्कि जो कुछ क्षतिग्रस्त हैं उनकी पुनर्रचना की सृजनशील चेष्टायें और जीवन को समोन्नत तथा सुन्दर एवं मनोहारीबनाने की परिकल्पना ही उसी समकालीनता का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं।य1एक अन्य स्थान पर कहा गया है–समकालीनता का सीध आशय है अपने समय के प्रति ईमानदार होना। अपने समय के प्रति व्यक्ति तभी ईमानदार होता है जब वह संकटों की परवाह किये बिना समय के क्रूर यथार्थ से अभेद सम्बन्ध स्थापितकर लेता है और उस निर्मम यथार्थ की ज्वाला में जलता हुआ, अद्भुत साहस के साथ समय को चुनौती भी देता है। समकालीन परिवेश और परिस्थितियों ने मानव जीवन को जिस सीमा तक संवेदनहीन बनाया है। वह कापफी

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 03 | April - June 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

निराशा का विषय है आज का मानव जीवन के सम्पूर्ण आदर्शों को छोड़ बैठा है जो उसके जीवन का वास्तविक श्रृंगार करते रहे हैं। आज आवश्यकता है कि–फ्समकालीन संदर्भों में पिछले भाव–बोध का संस्कारयुक्त प्रयोग हीसमकालीन कविता का लक्ष्य है और इस दृष्टि से प्रत्येक युग का साहित्य समकालीनसाहित्य कहा जा सकता है। वर्तमान में मनुष्य के सामने सबसे बड़ा अहम् सवाल मूल्यहीनता का है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्रा में मानव मूल्यों के ह्रास ने जिंदगी को अर्थहीन बना दिया है। प्रत्येक सम्बन्ध चाहे वह माता–पिता का हो, पिता–पुत्रा, भाई–बहिन, पति–पत्नी आदिनिकटवर्ती रिश्तों का सभी में ह्रास हो रहा है। इससे जीवन कापफी असहाय, निरीह और बेजान हो रहा है। आज हमें आपसी प्रेम की आवश्यकता है। इसीलिये हुकुमचन्द राजपाल ने व्यक्ति स्वातन्त्रय को स्वीकारते हुए कहा है–फउन्हें हम किसी सीमा म बाँध सकते हैं, क्योंकि देश–काल के अनुसार उन जीवन मूल्यों में थोड़ा बहुत परिवर्तनहोता रहता है। परन्तु कुछ मूल्य ऐसे हैं जिन्हें देशकाल अथवा परिवेश की सीमा में नहींबाँध जा सकता। व्यक्ति स्वातंत्रय ऐसा ही मूल्य है जिसे सभी स्वीकार करते हैं।य1इसीलिये भारती ने भी व्यक्ति–स्वातंत्रय मानवीय गौरव और विवेक को साहित्यिक मूल्यकहा है। उन्होंने इन मानवीय मूल्यों को प्राप्त करने की कोशिश भी की है।संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सत्य, प्रेम, दया, अहिंसा आदि मूल्य शाश्वतहैं। ये शाश्वत जीवन मूल्य सदैव कालजयी होते हैं। जबकि समकालीन जीवन मूल्यदेशकाल और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं।

सन्दर्भ :

1 भारती धर्मवीर चाँद और टूटे हुए लोग भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली 1998
3. भारती धर्मवीर बन्द गली का आखिरी मकान भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली,
4. भारती धर्मवीर गुनाहों का देवता भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, बाइसवां संस्करण
5. भारती धर्मवीर सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
6. भारती धर्मवीर ग्यारह सपनों का देश सं. लक्ष्मीचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पुनर्नवा संस्करण